पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी
प्रथम भाषा

अध्याय 25

प्रश्न बैंक

अध्याय 25: मोतीलाल नेहरू

बिरला एजुकेशन - मुफ्त नोट्स

birlaeducation.org

अध्याय 25: मोतीलाल नेहरू

जीवनी (सहायक पाठ)

कहानी: पाठ को ऐसे याद रखो

मोतीलाल नेहरू का जन्म 6 मई 1861 को आगरा में हुआ था। उनके पिता गंगाधर नेहरू थे। उन्होंने इलाहाबाद में पढ़ाई की और कानून की पढ़ाई पूरी करके इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की। वे अपने समय के सबसे सफल और प्रसिद्ध वकीलों में से एक बने।

मोतीलाल नेहरू पहले नरम दल के नेता थे, पर गांधी जी से प्रभावित होकर वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। उन्होंने विदेशी पोशाक छोड़कर खादी अपनाई और इलाहाबाद की गलियों में खादी बेची। 1923 में उन्होंने चित्तरंजन दास के साथ स्वराज पार्टी बनाई और 1928 में नेहरू रिपोर्ट तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष बने।

मोतीलाल नेहरू महान वकील, महान देशभक्त और महान व्यक्ति थे। वे स्वतंत्र मस्तिष्क के थे और हिंदू, मुस्लिम तथा अंग्रेज सभी के अच्छे प्रभावों को ग्रहण करते थे। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने पर उन्हें जेल भी जाना पड़ा। 6 फरवरी 1931 को लखनऊ में उनका देहांत हुआ।

जीवन की प्रमुख घटनाएँ

6 मई 1861: आगरा में जन्म। पिता गंगाधर नेहरू।

शिक्षा: इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की और कानून की पढ़ाई पूरी की। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की और सफल वकील बने।

birlaeducation.org

1919: अमृतसर अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

1923: चित्तरंजन दास के साथ स्वराज पार्टी की स्थापना की।

4 सितंबर 1924: एकता सम्मेलन की अध्यक्षता की। सम्मेलन में धर्म के नाम पर अत्याचार की निंदा का संकल्प पारित हुआ।

1928: नेहरू रिपोर्ट तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष बने।

1928: कलकत्ता अधिवेशन में दूसरी बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

1930: सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया और जेल गए। आनंद भवन कांग्रेस को सौंपा।

6 फरवरी 1931: लखनऊ में देहांत।

पाठ परिचय

यह पाठ पंडित मोतीलाल नेहरू के जीवन पर आधारित है। इसमें उनके व्यक्तित्व, वकालत, कांग्रेस में योगदान, स्वराज पार्टी और नेहरू रिपोर्ट के बारे में बताया गया है। वे जवाहरलाल नेहरू के पिता थे।

कठिन शब्द और उनके अर्थ

शब्द	अर्थ
प्रगति	विकास
मसौदा	प्रारूप

सर्वोपरि	सबसे ऊपर
हठधर्मिता	जिद को ही धर्म बना लेना
मध्यस्थता	बीच बचाव
संयम	संतोष, अपने पर नियंत्रण
पारित	स्वीकृत
उपनिवेशवाद	साम्राज्यवाद
सुसज्जित	अच्छी तरह सजा हुआ
खद्दर	खादी
सविनय अवज्ञा	विनय के साथ आज्ञा न मानना
कुशाग्र	कुश की तरह तेज

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)

1. मोतीलाल नेहरू का जन्म कब हुआ था?

(क) 6 मई 1861
(ख) 9 मई 1866
(ग) 23 जुलाई 1856
(घ) 28 जनवरी 1865

उत्तर: (क) 6 मई 1861

---

2. मोतीलाल नेहरू का जन्म कहाँ हुआ था?

(क) इलाहाबाद
(ख) लखनऊ
(ग) आगरा
(घ) दिल्ली

उत्तर: (ग) आगरा

---

3. मोतीलाल नेहरू किसके पिता थे?

(क) सुभाष चंद्र बोस
(ख) जवाहरलाल नेहरू
(ग) लाला लाजपत राय
(घ) चित्तरंजन दास

उत्तर: (ख) जवाहरलाल नेहरू

---

birlaeducation.org

4. मोतीलाल नेहरू किस पेशे से जुड़े थे?

(क) शिक्षक

(ख) वकील

(ग) डॉक्टर

(घ) पत्रकार

उत्तर: (ख) वकील

---

5. मोतीलाल नेहरू 1919 में किस अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने?

(क) अमृतसर

(ख) कलकत्ता

(ग) बनारस

(घ) लखनऊ

उत्तर: (क) अमृतसर

---

6. स्वराज पार्टी की स्थापना मोतीलाल नेहरू ने किसके साथ की थी?

(क) गांधी जी

(ख) चित्तरंजन दास

(ग) लाला लाजपत राय

(घ) बिपिन चंद्र पाल

birlaeducation.org

उत्तर: (ख) चित्तरंजन दास

---

7. स्वराज पार्टी की स्थापना कब हुई थी?

(क) 1919

(ख) 1923

(ग) 1928

(घ) 1930

उत्तर: (ख) 1923

---

8. नेहरू रिपोर्ट कब तैयार हुई थी?

(क) 1923

(ख) 1924

(ग) 1928

(घ) 1930

उत्तर: (ग) 1928

---

9. नेहरू रिपोर्ट तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष कौन थे?

(क) जवाहरलाल नेहरू

(ख) मोतीलाल नेहरू

(ग) चित्तरंजन दास

(घ) गांधी जी

उत्तर: (ख) मोतीलाल नेहरू

---

10. मोतीलाल नेहरू ने खादी कहाँ बेची थी?

(क) दिल्ली की गलियों में

(ख) इलाहाबाद की गलियों में

(ग) लखनऊ की गलियों में

(घ) आगरा की गलियों में

उत्तर: (ख) इलाहाबाद की गलियों में

---

11. 1930 में किस आंदोलन में भाग लेने पर मोतीलाल नेहरू को जेल जाना पड़ा?

(क) असहयोग आंदोलन

(ख) सविनय अवज्ञा आंदोलन

(ग) भारत छोड़ो आंदोलन

(घ) स्वदेशी आंदोलन

उत्तर: (ख) सविनय अवज्ञा आंदोलन

birlaeducation.org

---

12. मोतीलाल नेहरू का देहांत कब हुआ?

(क) 1 अगस्त 1920

(ख) 17 नवंबर 1928

(ग) 6 फरवरी 1931

(घ) 19 फरवरी 1915

उत्तर: (ग) 6 फरवरी 1931

---

2. रिक्त स्थान भरो

1. मोतीलाल नेहरू का जन्म 6 मई _____ को आगरा में हुआ था।

उत्तर: 1861

---

2. मोतीलाल नेहरू _____ के पिता थे।

उत्तर: जवाहरलाल नेहरू

---

3. मोतीलाल नेहरू इलाहाबाद उच्च न्यायालय में _____ करते थे।

उत्तर: वकालत

---

4. 1919 में मोतीलाल नेहरू _____ अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

उत्तर: अमृतसर

---

5. मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजन दास ने _____ में स्वराज पार्टी बनाई।

उत्तर: 1923

---

6. _____ रिपोर्ट तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू थे।

उत्तर: नेहरू

---

7. मोतीलाल नेहरू ने विदेशी पोशाक छोड़कर _____ अपनाई।

उत्तर: खादी

---

8. मोतीलाल नेहरू ने _____ की गलियों में खादी बेची।

उत्तर: इलाहाबाद

---

9. 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने पर उन्हें _____ जाना पड़ा।

उत्तर: जेल

birlaeducation.org

---

10. मोतीलाल नेहरू का देहांत 6 फरवरी _____ को लखनऊ में हुआ।

उत्तर: 1931

---

3. सही / गलत

1. मोतीलाल नेहरू का जन्म 6 मई 1861 को आगरा में हुआ था।

उत्तर: सही।

---

2. मोतीलाल नेहरू जवाहरलाल नेहरू के पिता थे।

उत्तर: सही।

---

3. मोतीलाल नेहरू पहले से ही गांधी जी के साथ असहयोग आंदोलन में थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: मोतीलाल नेहरू पहले नरम दल के नेता थे। बाद में वे गांधी जी से प्रभावित होकर स्वतंत्रता संग्राम में आए।

---

4. स्वराज पार्टी की स्थापना मोतीलाल नेहरू ने अकेले की थी।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: मोतीलाल नेहरू ने चित्तरंजन दास के साथ मिलकर 1923 में स्वराज पार्टी बनाई थी।

5. नेहरू रिपोर्ट 1928 में तैयार हुई थी।

उत्तर: सही।

6. मोतीलाल नेहरू ने विदेशी पोशाक पहनना जारी रखा।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: मोतीलाल नेहरू ने विदेशी पोशाक छोड़कर खादी अपनाई थी।

7. मोतीलाल नेहरू 1919 में अमृतसर अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे।

उत्तर: सही।

8. मोतीलाल नेहरू ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में गायत्री मंत्र का जाप किया था।

उत्तर: सही।

9. मोतीलाल नेहरू का देहांत 6 फरवरी 1931 को हुआ था।

उत्तर: सही।

10. मोतीलाल नेहरू धर्म को राजनीति से जोड़ना चाहते थे।

उत्तर: गलत। सही बात यह है: मोतीलाल नेहरू धर्म को राजनीति से नहीं जोड़ना चाहते थे।

birlaeducation.org

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ)

1. मोतीलाल नेहरू का जन्म कब और कहाँ हुआ था? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का जन्म 6 मई 1861 को आगरा में हुआ था। उनके पिता का नाम गंगाधर नेहरू था।

2. मोतीलाल नेहरू के पिता कौन थे? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू के पिता गंगाधर नेहरू थे। वे कश्मीरी पंडित परिवार से थे।

3. मोतीलाल नेहरू किस पेशे से जुड़े थे? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू वकील थे। उन्होंने इलाहाबाद में शिक्षा पाई और इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की। वे अपने समय के सबसे सफल वकीलों में से एक बने।

4. मोतीलाल नेहरू का व्यक्तित्व देखकर रोम के वाणिज्य दूतों की याद क्यों आती थी? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का व्यक्तित्व बहुत भव्य और प्रभावशाली था। उनका कद, उनकी वेशभूषा और उनका आत्मविश्वास देखकर लोगों को प्राचीन रोम के वाणिज्य दूतों की याद आती थी।

5. मोतीलाल नेहरू महान वकील, महान देशभक्त और महान व्यक्ति कैसे थे? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू महान वकील थे क्योंकि वे इलाहाबाद के सबसे सफल वकीलों में से एक थे। वे महान देशभक्त थे क्योंकि उन्होंने देश के लिए अपनी सुख सुविधा छोड़ दी थी। वे महान व्यक्ति थे क्योंकि उनका हृदय विशाल था और वे सबके भले के लिए काम करते थे।

---

6. मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष कब बने? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने। पहली बार 1919 में अमृतसर अधिवेशन में और दूसरी बार 1928 में कलकत्ता अधिवेशन में।

---

7. स्वराज पार्टी की स्थापना किसने और कब की? अतिरिक्त

स्वराज पार्टी की स्थापना 1923 में मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजन दास ने की थी। इसका उद्देश्य काउंसिल में जाकर अंग्रेज सरकार की गलत नीतियों का विरोध करना था।

---

8. नेहरू रिपोर्ट क्या थी? अतिरिक्त

नेहरू रिपोर्ट 1928 में तैयार हुआ भारत के संविधान का मसौदा था। इसे तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू थे। यह भारत के भावी संविधान की रूपरेखा थी।

---

9. नेहरू रिपोर्ट तैयार करते समय मोतीलाल नेहरू ने किन बातों का ध्यान रखा? अतिरिक्त

biharboardeducation.org

नेहरू रिपोर्ट तैयार करते समय मोतीलाल नेहरू ने इन बातों का ध्यान रखा था कि संसद का स्वरूप प्रजातांत्रिक हो, हम हठधर्मिता का दृष्टिकोण न रखें, दूसरे देशों से संबंधों में मध्यम मार्ग अपनाएँ और धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए।

---

10. एकता सम्मेलन कब हुआ और उसमें क्या संकल्प पारित हुआ? अतिरिक्त

एकता सम्मेलन 4 सितंबर 1924 को हुआ था और मोतीलाल नेहरू ने इसकी अध्यक्षता की थी। इसमें यह संकल्प पारित हुआ था कि किसी भी धर्म के पूजा स्थलों को अपवित्र करना या किसी व्यक्ति को धर्म बदलने के लिए यातना या सजा देना निंदा के योग्य है।

---

11. मोतीलाल नेहरू ने खादी क्यों अपनाई? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने पर विदेशी पोशाक का त्याग कर दिया और खादी को अपना लिया। खादी पहनने के बाद उनका व्यक्तित्व और भी आकर्षक हो उठा था। उन्होंने इलाहाबाद की गलियों में खादी भी बेची थी।

---

12. मोतीलाल नेहरू को 1930 में जेल क्यों जाना पड़ा? अतिरिक्त

1930 में गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण मोतीलाल नेहरू को सजा भोगनी पड़ी थी। उन्होंने नमक कानून तोड़ने के आंदोलन में भाग लिया था।

---

13. मोतीलाल नेहरू का पूरा परिवार राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा कैसे बन गया? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू के व्यक्तित्व और कार्यों से प्रभावित होकर तथा गांधी जी से प्रेरित होकर उनका पूरा परिवार ही राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बन गया था। उनके पुत्र जवाहरलाल नेहरू भी स्वतंत्रता संग्राम के बड़े नेता बने।

---

14. मोतीलाल नेहरू के अंतिम दिनों के बारे में क्या कहा गया है? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू अपने जीवन के अंतिम दिनों में गायत्री मंत्र का जाप करने लगे थे। ऐसा वे किसी ईश्वरीय भय के कारण नहीं करते थे, क्योंकि उनका यह मानना था कि ईश्वर न तो क्रोधी पिता है और न ही कोई कठोर जज है।

---

15. मोतीलाल नेहरू का ईश्वर के बारे में क्या मानना था? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का मानना था कि ईश्वर न तो क्रोधी पिता है और न ही कोई कठोर जज है। वे मानव की आत्मा में और उससे इतिहास को बदल देने की क्षमता में पूरा विश्वास रखते थे।

---

16. मोतीलाल नेहरू संसदीय संस्थाओं के विकास में कैसे सहायक हुए? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू संसदीय संस्थाओं के विकास में बहुत सहायक हुए। वे स्वराज पार्टी के नेता के रूप में काउंसिल में गए और वहाँ अंग्रेज सरकार की नीतियों का विरोध किया। उन्होंने नेहरू रिपोर्ट तैयार करके भारत के भावी संविधान की रूपरेखा दी, जो प्रजातांत्रिक संसद पर आधारित थी।

---

17. मोतीलाल नेहरू का देहांत कब और कहाँ हुआ? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का देहांत 6 फरवरी 1931 को लखनऊ में हुआ।

birlaeducation.org

---

18. मोतीलाल नेहरू ने आनंद भवन किसे सौंपा? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू ने 1930 में अपना भवन आनंद भवन कांग्रेस को सौंप दिया था। यह भवन बाद में कांग्रेस का कार्यालय बना।

---

19. मोतीलाल नेहरू स्वतंत्र मस्तिष्क के व्यक्ति कैसे थे? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू स्वतंत्र मस्तिष्क के थे और पूर्वाग्रहों से मुक्त थे। वे हिंदू, मुस्लिम और अंग्रेज सभी के अच्छे प्रभावों को ग्रहण करने वाले थे। वे किसी भी धर्म या विचार की जिद में नहीं पड़ते थे।

---

20. मोतीलाल नेहरू के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सुख सुविधा छोड़कर भी देश की सेवा की जा सकती है। उन्होंने अपनी सफल वकालत और वैभवपूर्ण जीवन छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। उनमें मानव की आत्मा में विश्वास था, जो हमें सिखाता है कि मनुष्य अपनी मेहनत से इतिहास बदल सकता है।

---

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ)

1. 'उनका व्यक्तित्व देखकर हमें रोम के वाणिज्य दूतों की याद आती थी।' पंक्ति के आधार पर मोतीलाल नेहरू के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन करें। पाठ्यपुस्तक

मोतीलाल नेहरू का व्यक्तित्व बहुत भव्य और प्रभावशाली था। उनका कद, उनकी वेशभूषा, उनका आत्मविश्वास और उनका व्यवहार देखकर लोगों को प्राचीन रोम के वाणिज्य दूतों की याद आती थी। वे महान वकील थे और इलाहाबाद के सबसे सफल वकीलों में से एक थे। वे महान देशभक्त थे, जिन्होंने देश के लिए अपनी सुख सुविधा छोड़ दी थी। वे महान व्यक्ति थे, क्योंकि उनका हृदय विशाल था। वे स्वतंत्र मस्तिष्क के थे और पूर्वाग्रहों से मुक्त थे। हिंदू, मुस्लिम और अंग्रेज सभी के अच्छे प्रभावों को वे ग्रहण करते थे। उनका व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि खादी पहनने के बाद वह और भी बढ़ गया था।

---

2. 'वे एक महान वकील थे, महान देशभक्त, महान व्यक्ति।' पंक्ति के आधार पर मोतीलाल नेहरू की चारित्रिक विशेषताओं को लिखें। पाठ्यपुस्तक

मोतीलाल नेहरू महान वकील थे, महान देशभक्त थे और महान व्यक्ति थे। महान वकील के रूप में वे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सबसे सफल वकीलों में से एक थे और उनकी वकालत की धाक पूरे देश में थी। महान देशभक्त के रूप में उन्होंने विदेशी पोशाक छोड़कर खादी अपनाई, इलाहाबाद की गलियों में खादी बेची और 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेकर जेल गए। महान व्यक्ति के रूप में वे स्वतंत्र मस्तिष्क के थे, पूर्वाग्रहों से मुक्त थे और हिंदू, मुस्लिम तथा अंग्रेज सभी के अच्छे प्रभावों को ग्रहण करते थे। उनसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वे कोई निंदनीय कार्य करेंगे, क्योंकि वे हर अर्थ में विशाल हृदय के व्यक्ति थे।

---

3. 'उन्हें मानव की आत्मा में और उससे इतिहास को बदल देने की क्षमता में पूर्ण विश्वास था।' इस आधार पर मोतीलाल नेहरू का वर्णन करें। पाठ्यपुस्तक

मोतीलाल नेहरू को मानव की आत्मा में और उससे इतिहास को बदल देने की क्षमता में पूरा पूरा विश्वास था। उनका मानना था कि मनुष्य अपनी इच्छा और मेहनत से इतिहास की दिशा बदल सकता है। इस विश्वास का प्रमाण 4 सितंबर 1924 का एकता सम्मेलन है, जिसकी उन्होंने अध्यक्षता की थी। उस सम्मेलन में यह संकल्प पारित हुआ था कि किसी भी धर्म के पूजा स्थलों को अपवित्र करना या किसी व्यक्ति को धर्म बदलने के लिए यातना या सजा देना निंदा के योग्य है। दूसरे लोगों को विवश करके अपना धर्म स्वीकार करवाना या दूसरों की कीमत पर अपना धर्म लागू करना भी निंदनीय है। मोतीलाल नेहरू के जीवन के अंतिम दिनों में गायत्री मंत्र का जाप भी इसी विश्वास का प्रमाण था, क्योंकि वे मानते थे कि ईश्वर न तो क्रोधी पिता है और न ही कोई कठोर जज है।

---

4. संसदीय संस्थाओं के विकास में मोतीलाल नेहरू के योगदान की चर्चा संकलित पाठ के आधार पर करें। पाठ्यपुस्तक

भारत में संसदीय संस्थाओं के विकास के लिए मोतीलाल नेहरू के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। मोतीलाल नेहरू उस सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष थे, जिसे हमारे देश के संविधान का मसौदा तैयार करने का दायित्व दिया गया था। उन्होंने संविधान का निर्माण करने में इन बातों का ध्यान रखा था कि संसद का स्वरूप प्रजातांत्रिक हो, हम हठधर्मिता का दृष्टिकोण न रखें, दूसरे देशों से संबंधों में मध्यम मार्ग अपनाएँ और धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए। हमारा भारतीय संविधान समाज के जिन उद्देश्यों तथा सिद्धांतों पर आधारित है, वह मोतीलाल नेहरू की ही देन है। उन उद्देश्यों को पूरा करने में हम आज तक सफल नहीं हो पाए हैं, क्योंकि हमारे अंदर वह कर्तव्य भावना, ऊर्जा, परिश्रम तथा संगठन का अभाव है।

---

5. मोतीलाल नेहरू का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का जन्म 6 मई 1861 को आगरा में हुआ था। उनके पिता गंगाधर नेहरू थे। उन्होंने इलाहाबाद में शिक्षा पाई और कानून की पढ़ाई पूरी करके इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की। वे अपने समय के सबसे सफल वकीलों में से एक बने। 1919 में वे अमृतसर अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 1923 में उन्होंने चित्तरंजन दास के साथ स्वराज पार्टी

बनाई। 1928 में वे नेहरू रिपोर्ट तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष बने और कलकत्ता अधिवेशन में दूसरी बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेकर जेल गए। 6 फरवरी 1931 को लखनऊ में उनका देहांत हुआ।

---

6. मोतीलाल नेहरू की वकालत के बारे में लिखिए। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सबसे सफल वकीलों में से एक थे। उन्होंने कानून की पढ़ाई पूरी करके इलाहाबाद में वकालत शुरू की थी। उनकी वकालत की धाक पूरे देश में थी और बड़े बड़े मुकदमे उनके पास आते थे। वकालत से उन्हें बहुत धन और सम्मान मिला था। उनका जीवन वैभवपूर्ण था और वे शाही ढंग से रहते थे। फिर भी उन्होंने देश की सेवा के लिए यह सुख सुविधा छोड़ दी थी। वे मानते थे कि वकील का काम केवल धन कमाना नहीं है, बल्कि न्याय और देश की सेवा करना भी है। इसीलिए वे महान वकील के साथ साथ महान देशभक्त भी कहलाए।

---

7. मोतीलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष कब बने? उनके अध्यक्षीय कार्यों पर प्रकाश डालें। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने थे। पहली बार 1919 में अमृतसर अधिवेशन में, जो जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद हुआ था। दूसरी बार 1928 में कलकत्ता अधिवेशन में, जिसमें नेहरू रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कांग्रेस को संगठित किया और स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। वे पहले नरम दल के नेता थे, पर बाद में गांधी जी से प्रभावित होकर वे पूरी तरह स्वतंत्रता संग्राम में आ गए थे। उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने संसदीय संस्थाओं के विकास और संविधान निर्माण की दिशा में काम किया।

---

8. स्वराज पार्टी के बारे में लिखिए। अतिरिक्त

birlaeducation.org

स्वराज पार्टी की स्थापना 1923 में मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजन दास ने की थी। असहयोग आंदोलन के स्थगित होने के बाद कांग्रेस में यह प्रश्न उठा था कि काउंसिल में जाना चाहिए या नहीं। मोतीलाल नेहरू और चित्तरंजन दास का मानना था कि काउंसिल में जाकर अंग्रेज सरकार की गलत नीतियों का विरोध करना चाहिए। इसीलिए उन्होंने स्वराज पार्टी बनाई। स्वराज पार्टी ने चुनावों में भाग लिया और काउंसिल में जाकर सरकार की नीतियों की कड़ी आलोचना की। इस प्रकार स्वराज पार्टी ने संसदीय मार्ग से भी स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया।

---

9. नेहरू रिपोर्ट के बारे में विस्तार से लिखिए। अतिरिक्त

नेहरू रिपोर्ट 1928 में तैयार हुआ भारत के संविधान का मसौदा था। इसे तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू थे। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत को डोमिनियन का दर्जा मिलना चाहिए और संसद का स्वरूप प्रजातांत्रिक होना चाहिए। मोतीलाल नेहरू ने संविधान निर्माण में इन बातों का ध्यान रखा था कि हम हठधर्मिता का दृष्टिकोण न रखें, दूसरे देशों से संबंधों में मध्यम मार्ग अपनाएँ और धर्म को राजनीति से अलग रखा जाए। हमारा भारतीय संविधान समाज के जिन उद्देश्यों तथा सिद्धांतों पर आधारित है, वह मोतीलाल नेहरू की ही देन है। नेहरू रिपोर्ट भारतीय संविधान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम थी।

---

10. एकता सम्मेलन 1924 के बारे में लिखिए। अतिरिक्त

एकता सम्मेलन 4 सितंबर 1924 को हुआ था और मोतीलाल नेहरू ने इसकी अध्यक्षता की थी। उस समय देश में हिंदू मुस्लिम मतभेद बढ़ रहे थे। सम्मेलन में यह संकल्प पारित हुआ था कि किसी भी धर्म के पूजा स्थलों को अपवित्र करना या किसी व्यक्ति को धर्म बदलने के लिए यातना या सजा देना निंदा के योग्य है। दूसरे लोगों को विवश करके अपना धर्म स्वीकार करवाना या दूसरों

की कीमत पर अपना धर्म लागू करना भी निंदनीय है। यह सम्मेलन मोतीलाल नेहरू के इस विश्वास का प्रमाण था कि मानव की आत्मा में इतिहास को बदल देने की क्षमता है और धर्म के नाम पर अत्याचार नहीं होना चाहिए।

---

11. मोतीलाल नेहरू ने खादी क्यों अपनाई? इसका उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने पर अपनी विदेशी पोशाक का त्याग कर दिया और खादी को अपना लिया। खादी पहनने के बाद उनका व्यक्तित्व और भी आकर्षक हो उठा था। इतना ही नहीं, उन्होंने इलाहाबाद की गलियों में खादी भी बेची थी। खादी अपनाना केवल पोशाक बदलना नहीं था, बल्कि यह स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का प्रतीक था। इससे वे जनता के और निकट आ गए थे। उनके इस कदम से उनके परिवार के लोग भी प्रेरित हुए और पूरा परिवार राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बन गया था।

---

12. सविनय अवज्ञा आंदोलन में मोतीलाल नेहरू की भूमिका बताइए। अतिरिक्त

1930 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया था। मोतीलाल नेहरू ने भी इस आंदोलन में भाग लिया था और उन्हें सजा भोगनी पड़ी थी। उन्होंने नमक कानून तोड़ने के आंदोलन का समर्थन किया था। उसी वर्ष उन्होंने अपना भवन आनंद भवन कांग्रेस को सौंप दिया था। जेल जाने से उनकी सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ा था, पर उन्होंने देशसेवा नहीं छोड़ी थी। सविनय अवज्ञा आंदोलन में उनकी भागीदारी दिखाती है कि वे सुख सुविधा छोड़कर देश के लिए कष्ट सहने को तैयार थे।

---

13. मोतीलाल नेहरू के परिवार का राष्ट्रीय आंदोलन में क्या योगदान था? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू के व्यक्तित्व तथा कार्यों से प्रभावित होकर और गांधी जी से प्रेरित होकर उनका पूरा परिवार ही राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बन गया था। उनके पुत्र जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्रता संग्राम के बड़े नेता बने और बाद में भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। उनकी पुत्रवधू कमला नेहरू और पौत्री इंदिरा गांधी भी आंदोलन से जुड़ी थीं। मोतीलाल नेहरू ने 1930 में आनंद भवन कांग्रेस को सौंप दिया था, जो कांग्रेस का कार्यालय बना। इस प्रकार नेहरू परिवार ने स्वतंत्रता संग्राम में पीढ़ियों तक योगदान दिया।

birlaeducation.org

---

14. मोतीलाल नेहरू के अंतिम दिनों के बारे में लिखिए। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू अपने जीवन के अंतिम दिनों में गायत्री मंत्र का जाप करने लगे थे। लेकिन ऐसा वे किसी ईश्वरीय भय के कारण नहीं करते थे, क्योंकि उनका यह मानना था कि ईश्वर न तो क्रोधी पिता है और न ही कोई कठोर जज है। उनका मानना था कि मानव की आत्मा में इतिहास को बदल देने की क्षमता है। 1930 में जेल जाने के बाद उनकी सेहत बिगड़ गई थी। 6 फरवरी 1931 को लखनऊ में उनका देहांत हुआ। उनके देहांत से देश ने एक महान वकील, महान देशभक्त और महान व्यक्ति को खो दिया था।

---

15. मोतीलाल नेहरू के धर्म और राजनीति संबंधी विचारों पर प्रकाश डालें। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का मानना था कि धर्म को राजनीति से अलग रखना चाहिए। नेहरू रिपोर्ट तैयार करते समय उन्होंने इस बात का विशेष ध्यान रखा था कि संविधान में धर्म और राजनीति अलग रहें। एकता सम्मेलन 1924 में उन्होंने यह संकल्प पारित कराया था कि किसी भी धर्म के पूजा स्थलों को अपवित्र करना या किसी व्यक्ति को धर्म बदलने के लिए यातना देना निंदा के योग्य है। वे स्वतंत्र मस्तिष्क के थे और पूर्वाग्रहों से मुक्त थे। हिंदू, मुस्लिम और अंग्रेज सभी के अच्छे प्रभावों को वे ग्रहण करते थे। उनके ये विचार भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की नींव बने।

---

16. मोतीलाल नेहरू के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का व्यक्तित्व बहुत भव्य और प्रभावशाली था। उनका कद, उनकी वेशभूषा और उनका आत्मविश्वास देखकर लोगों को प्राचीन रोम के वाणिज्य दूतों की याद आती थी। वे स्वतंत्र मस्तिष्क के थे और पूर्वाग्रहों से मुक्त थे। वे हिंदू, मुस्लिम और अंग्रेज सभी के अच्छे प्रभावों को ग्रहण करने वाले थे। वे महान वकील, महान देशभक्त और महान व्यक्ति थे। उनका हृदय विशाल था और वे सबके भले के लिए काम करते थे। वे खादी पहनने के बाद और भी आकर्षक लगते थे। उनका व्यक्तित्व ही उनकी सबसे बड़ी शक्ति थी।

---

17. मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल नेहरू के संबंधों के बारे में लिखिए। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू जवाहरलाल नेहरू के पिता थे। उन्होंने जवाहरलाल को अच्छी शिक्षा दी थी और उन्हें इंग्लैंड भेजकर पढ़ाया था। मोतीलाल नेहरू के व्यक्तित्व और कार्यों से प्रभावित होकर जवाहरलाल भी राष्ट्रीय आंदोलन में आ गए थे। पिता और पुत्र दोनों ने मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में काम किया था। मोतीलाल नेहरू ने आनंद भवन कांग्रेस को सौंपा था, जो बाद में नेहरू परिवार का केंद्र बना। जवाहरलाल नेहरू बाद में भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। इस प्रकार पिता पुत्र दोनों ने देश की सेवा में अपना जीवन लगाया था।

---

18. मोतीलाल नेहरू के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन करें। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का जन्म 6 मई 1861 को आगरा में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद में शिक्षा पाई और कानून की पढ़ाई पूरी करके इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की। 1919 में वे अमृतसर अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 1923 में उन्होंने चित्तरंजन दास के साथ स्वराज पार्टी बनाई। 4 सितंबर 1924 को उन्होंने एकता सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1928 में वे नेहरू रिपोर्ट तैयार करने वाली सर्वदलीय समिति के अध्यक्ष बने और कलकत्ता अधिवेशन में दूसरी बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेकर जेल गए और आनंद भवन कांग्रेस को सौंपा। 6 फरवरी 1931 को लखनऊ में उनका देहांत हुआ।

biharboardeducation.org

---

19. मोतीलाल नेहरू के गुणों का आज के जीवन में क्या महत्व है? अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू के गुण आज के जीवन में भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनका स्वतंत्र मस्तिष्क हमें सिखाता है कि किसी भी विचार की जिद में नहीं पड़ना चाहिए। उनका धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि धर्म को राजनीति से अलग रखना चाहिए। उनकी देशभक्ति हमें सिखाती है कि सुख सुविधा छोड़कर भी देश की सेवा की जा सकती है। उनका मानव की आत्मा में विश्वास हमें सिखाता है कि मनुष्य अपनी मेहनत से इतिहास बदल सकता है। उनकी कर्तव्य भावना, ऊर्जा, परिश्रम और संगठन की भावना आज भी हमारे लिए प्रेरणा है।

---

20. मोतीलाल नेहरू के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। अतिरिक्त

मोतीलाल नेहरू का योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और संसदीय संस्थाओं के विकास में बहुत बड़ा था। वे महान वकील थे, जिन्होंने अपनी सफल वकालत छोड़कर देश की सेवा की। वे दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने और स्वराज पार्टी बनाकर संसदीय मार्ग से भी स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया। उन्होंने नेहरू रिपोर्ट तैयार करके भारत के भावी संविधान की रूपरेखा दी, जो प्रजातांत्रिक संसद पर आधारित थी। उन्होंने धर्म को राजनीति से अलग रखने का सिद्धांत दिया, जो भारतीय संविधान की नींव बना। उनका जीवन आज भी देशसेवा, त्याग और मानवता में विश्वास की प्रेरणा देता है।
